International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 7, Issue 05, May 2020
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

"प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के शालेय समायोजन का अध्ययन"

दीप्ति सिंह राठौर, सहायक प्राध्यापक,
सांदीपनी एकेडमी, पेन्ड्री (मस्तूरी), जिला – बिलासपुर (छ.ग.)

सारां"ा

प्रस्तुत शोध अध्ययन उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के प्रतिभा"ााली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के शालेय समायोजन को जानने के लिए किया गया है। शोध हेतु राज्य छत्तीसगढ़ के जिला – बिलासपुर के दो विकासखण्ड मस्तूरी और बिल्हा के 100 उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थीयों का चयन उद्दे"य पूर्ण न्यायद"र्ा विधि द्वारा किया गया है। विद्यार्थियों के शालेय समायोजन को जानने के लिए आंकड़ो के संग्रह हेतु डॉ. ए0के0 सिन्हा व डॉ. आर0पी0 सिंह (1984) द्वारा निर्मित समायोजन वस्तू सूची का प्रयोग किया गया है। उपकरणों से प्राप्त आंकड़ों के वि"लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और CR का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय वि"लेषण के बाद यह पाया गया कि प्रतिभा"ााली एवं पिछड़े बालकों के भावात्मक शालेय समायोजन, सामाजिक शालेय समायोजन और शैक्षिक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया अर्थात् पूर्ण रूप में शालेय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। परिणाम में यह पाया गया कि पिछड़े बालक मानसिक अस्थिरता, भद्र व्यवहार और कुसमायोजन के कारण शालेय कार्यो में पिछड़े रह जाते है इसके विपरीत प्रतिभा"ााली बालक स्थिर संवेग, श्रेष्ठ सामाजिक व शैक्षिक समायोजन के साथ शालेय समायोजन में सफलता पूर्वक द"र्िात होते है।

की वर्ड – प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थी, शालेय समायोजन।

प्रस्तावना –

ज्ञान केवल वह नहीं है जो विद्यार्थियों को शाला में मिले बल्कि ज्ञान या शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम हँ जो जीवन भर चलता जाता है। मनुष्य अपने विभिन्न अनुभवों को संजोता है जो उसे संपूर्ण जीवन में समायोजन के साथ जीने की प्रेरणा एवं सीख देती हैं। विद्यार्थि चाहे प्रतिभाशाली हो या पिछड़े शिक्षा समान रूप से सभी स्तरो के विद्यार्थीयों को एक साथ प्राप्त हो बस विद्यार्थीयो में ज्ञान ग्रहण करने की क्षमता अलग–अलग होती है जो उनके व्यक्तित्व के अनुसार होती है। प्रतिभाशाली

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

बालको की विशेषता बताते हुए टरमन व ओडन ने कहा है कि "वह प्रतिभाशाली बालक शारीरिक गठन, सामाजिक समाजोन, व्यक्तित्व के लक्षणों विद्यालय – उपलब्धि, खेल की सूचनाओं और रचियों की बहुरूपता में सामान्य बालको से बहुत श्रेष्ठ होते हैं" अर्थात् प्रतिभाशाली बालक, ऐसे विद्यार्थियों को कहा जा सकता है जो सामान्य विद्यार्थि से लगभग सभी बातो में श्रेष्ठ होते हैं। सामान्यता ऐसे विद्यार्थियों IQ या बुद्धिलब्धि 120 या उससे ऊपर होता हैं। ऐसे बालको के व्यक्तित्व में कई बातें परिलक्षित होती है जैसे मानसिक प्रक्रिया तेज होना, विशाल शब्द भण्डार, पाठ्य विषयों में अत्यधिक रूचि आदि। प्रकार कहा जा सकता है कि प्रतिभाशाली बालको की घरेलू वातावरण तथा सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि सामान्य या औसत विद्यार्थियो से ज्यादा होती है या श्रेष्ठ होती है।

वहीं कुछ विद्यार्थि ऐसे भी होते हैं जिन्हे शिक्षा एवं अवसर सामान्य या प्रतिभा"ााली बालको के सामान प्राप्त होती है परन्तु वह शैक्षिक या सामाजिक रूप से अन्य समकक्ष बालकों से पीछड़े या पीछे रह जाते हैं। पिछड़े बालको को परिभाषित करते हुए हिज मैजेस्ट्री कार्यालय ने अपने प्रकाशन में कहा है कि "पिछड़े बालक वे होते हैं, जो उस गति से आगे बढने में असमर्थ होते हैं, जिस गति से उनकी आयु के अधिकांश साथी आगे बढ़ रहे हैं" आर्थात् अपने समकक्ष साथीयों से शिक्षा व बुद्धि संबंधि चीजो में सामान्य रूप से पीछे रहते हैं। यहां पर विद्यार्थियों को पीछड़ापन दो रूप में माना जा रहा है एक तो शैक्षिक रूप से सामान्य स्तर से भी पिछड़ा एवं दूसरा बुद्धि या मानसिक रूप से पिछड़ा इन दोनों रूपो की शैक्षिक मंदता एवं मानसिक मंदता कहा जाता है। इनमें सीखने की इच्छा, रूचि एवं गति धीमी या कम होती है ऐसे विद्यार्थी में व्यवहार संबंधित बुद्धि समस्या होती है जो कुसमायोजन का कारण होती है इनकी बुद्धिलाब्धि 85 सा उससे कम होती है।

बालक चाहे प्रतिभाली हो या पीछड़ा शाला के लिए एक समान होता है। शाला में सब को एक साथ लेकर चलना होता है। एवं विद्यार्थि भी शाला में समायोजन करना सीखते है यह उनके जीवन के लिए व्यक्तित्व के विकास व शैक्षिक विकास के लिए, अति आवश्यक है। गेट्स एवं अन्य ने समायोजन को परिभावित करते हुए कहते है कि "सामायोजन, यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित संबंध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।" इस प्रकार कहा जा सकता है कि विद्यार्थी अपने एवं शाला के वातावरण के मध्य संतुलित स्थापित करता है या संतुलन बनाये रखने के लिए अपने व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन लाता है।

विद्यार्थी अपने व शाला के वातावरण के मध्य से संतुलन बनाए रखने के लिए कई कार्य करता है, वह अपने आचरण को शाला के नियमों के अनुसार – अनुकूल करता है व सन्तुलन बैठाता है, वह शैक्षिक व अव्यवहारिक समस्याओं को

सुलझाता है और समय आने पर आवश्यक संतुलन भी बनाता है। शालाा में समायोजन कई रूप में होता है जैसे सामाजिक

समायोजन जो विद्यार्थी अपने शाला के छोटे समूह में रह कर सबको साथ लेकर करता है। भावात्मक समायोजन यह बालको के भावनाओं से जुड़ा होता है जिसे ठेस लगने पर भी संयम बनाए रखता है और अन्तिम है शैक्षिक समायोजन जो विद्यार्थी शाला के शैक्षिक कार्यो को पूर्ण करने व सफल करने के लिए अपनाता है।

किशोरों में शैक्षिक, भावात्मक एवं सामाजिक समायोजन का एक दबाव होता है कि इस कारण शालेय समायोजन में अस्थिरता आ जाती है इस हेतु प्रस्तुत शोध पत्र में प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के शालेय समायोजना का अध्ययन कार्य किय जा रहा है। जिसमे स्वतन्त्र चर के रूप में प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालक है जिनका प्रभाव शालेय समायोजन में देखा जा रहा है।

भाोध के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोधपत्र में चरों के आधार पर निम्न उद्देश्य बनाए गये हैं–

1. प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के शालेय समायोजन का अध्ययन करना।
2. प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के भावात्मक शालेय समायोजन का अध्ययन करना।
3. प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के सामाजिक शालेय समायोजन का अध्ययन करना।
4. प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्याथियों के शैक्षिक शालेय समायोजन का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

H_{01} - प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के शालेय समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

H_{02} - प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के भावात्मक शालेय समायोजन में सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा।

H_{03} - प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के सामाजिक शालेय समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

H_{04} - प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्याथियों के शैक्षिक शालेय समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

परिसीमन–

1. प्रस्तुत शोध पत्र छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले के 2 विकासरखंड बिल्हा व मस्तुरी तक सीमित है।
2. प्रस्तुत शोध पत्र बिल्हा व मस्तुरी विकासखण्ड के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 11वीं कक्ष के विद्यार्थीयो तक सीमित हैं।

शोध अभिकल्प :–

- **न्यादर्श** – प्रस्तुत शोध पत्र में बिल्हा व मस्तुरी विकासखण्ड के 11वीं कक्षा के 100 विद्यार्थियो का का चयन उद्देश्य पूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है।
- **उपकरण** – प्रस्तुत शोध–पत्र में एक उपकरण विधियों का प्रयोग किया गया है –

i. **AISS** - Adjustment Inventory for School Student
डॉ. ए. के. सिन्हा एवं डॉ आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन वस्तु सूची (1984) का प्रयोग समायोजन एवं उसके तीन क्षेत्र सांवेगिक, शैक्षिक व सामाजिक समायोजन को मापने के लिए किया गया है। जिसमें 20–20 प्रश्नों के 3 सेट है अर्थात कुल 60 प्र"न है जिसमें हॉ या नही दो सम्भावित उत्तर दीये गये है। जिसमें हॉ पर 1 एवं नही पर शून्य अंक दिया जायेगा। प्राप्त अंको के योग को आँकड़ों के रूप में प्रयोग किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकीय–

प्रस्तुत शोध पत्र मे उपकरण से प्राप्त आंकड़ो के वि"लेषण हेतू मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं CR का प्रयोग कर सार्थकता की जांच किया गया।

परिकल्पनाओ का परीक्षण एवं विश्लेषण –

- **प्रथम परिकल्पना –**

H_{01} - "प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।"

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए प्राप्त आंकड़ों को प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों में वर्गीकृत किया गया है व प्राप्त आंकड़ों से मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य प्राप्त किया गया है जो कि तालिका क्रमांक 1 में प्रदर्शित है।

तालिका क्रमांक 01

क्र.	विद्यार्थी समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	कांतिक अनुपात (CR)	स्वतंत्रता की कोटी (df)	सार्थकता (CR)	परिणाम
1.	प्रतिभा”ााली बालक	50	10.46	4.66	6.81	98	0.01 स्तर पर सार्थक	H_{01} अस्वीकृत
2.	पिछड़े बालक	50	17.34	5.41				

विश्लेषण –

उपरोक्त तालिका 03 के विश्लेषण के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः M_1 = 10.46 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_1 = 4.66 प्राप्त हुआ तथा पिछड़े बालकों के प्राप्तांको का मध्यमान M_2 = 17.34 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_2 = 5.41 प्राप्त हुआ, जिसकी सार्थकता के परीक्षण हेतु क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य निकाला गया जिसका मान CR = 6.81 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर 2.58 से अधिक है । अतः CR का मान 0.01 स्तर पर सार्थक सिद्ध होता हैं ।

द्वितीय परिकल्पना –

H_{02} – ”प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के भावात्मक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।”

इन परिकल्पना परीक्षण के लिए प्राप्त आंकड़ो को प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों में वर्गीकृत किया गया है एवं प्राप्त आंकड़ो से मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य प्राप्त किया गया है प्रस्तुत तालिका में प्रदर्”ात है –

तालिका कमांक – 02

क्र.	विद्यार्थी समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	कांतिक अनुपात (CR)	स्वतंत्रता की कोटी (df)	सार्थकता (CR)	परिणाम
1.	प्रतिभा”ााली बालक	50	1.58	1.56	5.06	98	0.01 स्तर पर सार्थक	**H_{02}** अस्वीकृ
2.	पिछड़े बालक	50	4.14	3.24				

विश्लेषण –

उपरोक्त तालिका 01 के विश्लेषण के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः M_1 = 1.58 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_1 = 1.56 प्राप्त हुआ तथा पिछड़े बालकों के प्राप्तांको का मध्यमान M_2 = 4.14 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_2 = 3.24 प्राप्त हुआ, जिसकी सार्थकता के परीक्षण हेतु क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य निकाला गया जिसका मान CR = 5.06 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर 2.58 से अधिक है । अतः CR का मान 0.01 स्तर पर सार्थक सिद्ध होता हैं ।

तृतीय परिकल्पना –

H_{03} - "प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के सामाजिक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।"

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए प्राप्त आंकड़ों को प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों में वर्गीकृत किया गया है व प्राप्त आंकड़ों से मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य प्राप्त किया गया है जो कि तालिका क्रमांक 3 में प्रदर्शित है ।

तालिका कमांक – 03

क्र.	विद्यार्थी समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	क्रांतिक अनुपात (CR)	स्वतंत्रता की काटी (df)	सार्थकता (CR)	परिणाम
1.	प्रतिभा”ााली बालक	50	5.9	2.2	13.14	98	0.01 स्तर पर सार्थक	H_{03} अस्वीकृत
2.	पिछड़े बालक	50	7.2	1.87				

विश्लेषण –

उपरोक्त तालिका 02 के विश्लेषण के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः M_1 = 5.9 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_1 = 2.2 प्राप्त हुआ तथा पिछड़े बालकों के प्राप्तांको का मध्यमान M_2 = 7.74 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_2 = 1.87 प्राप्त हुआ, जिसकी सार्थकता के परीक्षण हेतु क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य निकाला गया जिसका मान CR = 13.14 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर 2.58 से अधिक है । अतः CR का मान 0.01 स्तर पर सार्थक सिद्ध होता हैं ।

चतुर्थ परिकल्पना –

H_{04} - "प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के शैक्षिक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।"

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए प्राप्त आंकड़ों को प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों में वर्गीकृत किया गया है व प्राप्त आंकड़ों से मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य प्राप्त किया गया है जो कि तालिका क्रमांक 4 में प्रदर्शित है।

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)

तालिका क्रमांक 04

क्र.	विद्यार्थी समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	कांतिक अनुपात (CR)	स्वतंत्रता की कोटी (df)	सार्थकता (CR)	परिणाम
1.	प्रतिभा”ाली बालक	50	3.14	2.55	4.86	98	0.01 स्तर पर सार्थक	**H_{04}** अस्वीकृत
2.	पिछड़े बालक	50	5.62	2.51				

विश्लेषण –

उपरोक्त तालिका 03 के विश्लेषण के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः M_1 = 3.14 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_1 = 2.55 प्राप्त हुआ तथा पिछड़े बालकों के प्राप्तांको का मध्यमान M_2 = 5.62 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_2 = 2.51 प्राप्त हुआ, जिसकी सार्थकता के परीक्षण हेतु क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य निकाला गया जिसका मान CR = 4.86 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर 2.58 से अधिक है । अतः CR का मान 0.01 स्तर पर सार्थक सिद्ध होता हैं ।

परिणाम एवं विवेचना –

H_{01} –"प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।“

परिणाम – **H_{01}** परिकल्पना अस्वीकृत हुई ।

विवेचना –

प्राप्त परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के शालेय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है, इसका कारण यह हो सकता है कि पिछड़े बालकों के उच्च प्राप्तांक मानसिक अस्थिरता, भद्र व्यवहार तथा पाठ्य सहगामी कार्यक्रमों में कुसमायोजन या असफलता को प्रदर्शित करता है तथा पिछड़े बालको की तुलना में प्रतिभाशाली बालकों के निम्न प्राप्तांक स्थिर संवेग, श्रेष्ठ सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक शालेय समायोजन में सफलता को दर्शाता है ।

H_{02} – "प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के भावात्मक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।"

परिणाम – **H_{02}** परिकल्पना अस्वीकृत हुई ।

विवेचना –

प्राप्त परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली एवं पिछडे बालकों के भावात्मक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है, इसका कारण यह हो सकता है कि पिछड़े बालकों के उच्च प्राप्तांक अस्थिरता को प्रदर्शित करता है तथा पिछड़े बालकों की तुलना में प्रतिभाशाली बालकों की मानसिक प्रक्रिया तीव्र, ज्ञान का स्तर उच्च होने के कारण प्राप्तांक निम्न पाया गया हैं ।

H_{03} – "प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के सामाजिक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।"

परिणाम – **H_{03}** परिकल्पना अस्वीकृत हुई ।

विवेचना –

प्राप्त परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली एवं पिछडे बालकों के सामाजिक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है, इसका कारण यह हो सकता है कि पिछड़े बालकों के उच्च प्राप्तांक अभद्र व अनाज्ञाकारी तथा समाज विरोधी कार्यों की प्रवृत्ति को प्रदर्शित करता है तथा पिछड़े बालकों की तुलना में प्रतिभाशाली बालकों की निम्न प्राप्तांक श्रेष्ठ सामाजिक शालेय समायोजन को प्रदर्शित करता हैं ।

H_{04} –"प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के शैक्षिक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।"

परिणाम – **H_{04}** परिकल्पना अस्वीकृत हुई ।

विवेचना –

प्राप्त परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के शैक्षिक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है, इसका कारण यह हो सकता है कि उच्च प्राप्तांक पाने वाले पिछड़े बालक पाठ्यक्रम और पाठ्य सहगामी कार्यक्रमों के साथ समायोजित नहीं होते हैं तथा पिछडे बालकों की तुलना में प्रतिभाशाली बालकों के निम्न प्राप्तांक शैक्षिक शालेय कार्यक्रमों में अधिक सफल रहते हैं ।

संदर्भ ग्रंथ

- डोंगा (1987) : "शिक्षकीय अभिक्षमता और प्रशिक्षार्थियों के समायोजन काअध्ययन", http://www-google-com
- गोस्वामी, पी. के. (1978) : "किशोरों के स्वधारणा / आत्म–प्रत्यय और विद्वता उपलब्धि तथा समायोजन के साथ इसके संबंध का एक अध्ययन" Third Survey of Research in Education (1978–1983). पृष्ठ क्र.
- गुप्ता, पी. (1984) : "परिव्यक्त संस्थागत पूर्व–किशोवय के स्वधारणा निर्भरता और समायोजन का अध्ययन", Fourth Survey of Research in Education (1983–1988) Vol–I, पृष्ठ क्र. 396.
- लाल, प्रो. रमन बिहारी एवं जोशी, डॉ. सुरेश, चन्द्र (2009) : "शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारंभिक सांख्यिकी", आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृष्ठ क्र. – 399.
- पाठक, पी.डी. (2009) : "शिक्षा मनोविज्ञान", अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, पृष्ठ क्र. 530, 531, 539.
- सारस्वत, आर. (1982): "दिल्ली के उच्च विद्यालयी छात्रों का समायोजन, मूल्यों, अकादमिक उपलब्धि, समाजिक–आर्थिक स्तर और लिंग–भेद के संबंध में स्वधारणा का एक अध्ययन", Fourth Survey of Research in Education (1983–1988) Vol–I, पृष्ठ क्र. 427.
- शर्मा, आर. ए. (2009) : "शिक्षा अनुसंधान एवं सांख्यिकी, इंटरलेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, पृष्ठ – 155, 174, 198, 202, 218, 220, 552.
- श्रीवास्तव, के.के. (1978) : "बस्ती जिले के किशोरी बालिका, छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक चिंता के प्रभाव का अध्ययन", Third Survey of Research in Education (1978–1983), पृष्ठ क्र. 694.
- शर्मा, श्रीमती आर. के. एवं दुबे, श्रीकृष्णा, बरोलिया, श्रीमती डॉ. ए. (नीवन संस्करण) : "शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार", राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा, पृष्ठ क्र.– 247, 248, 260.
- सरीन, डॉ. श्रीमती शशिकला एवं सरीन, डॉ. अंजनी (चतुर्थ संस्करण) : "शैक्षिक अनुसंधान विधियां, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, पृष्ठ 58.–56,